जोड़बीड़ कन्जरवेशन रिजर्व

उपवन संरक्षक वन्यजीव

बीकानेर (राजस्थान)

+91 151 2527901

http://jorbeerconservationreserve.org/

jorbeerbikaner

jorbeerbikaner

विशेष आभार

उपवन संरक्षक वन्यजीव, बीकानेर

वीरेन्द्र सिंह जोरा (RFS)

समस्त कार्मिक, वन्य जीव

प्रो. अनिल कुमार छंगाणी

विभागाध्यक्ष

पर्यावरण विज्ञान विभाग, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय

डॉ. प्रताप सिंह

जीव विज्ञान विभाग, डूँगर कॉलेज

रामनिवास कुमावत

डॉ. जीतू सोलंकी

विष्णु आचार्य

डॉ. अनिल आरोड़ा

डॉ. आजाद ओझा

अभिनव यादव

शुभम कलवाणी

राधाकिशन

विशाल वर्मा (WII)

विकास (WII)

संकलनकर्ता

करणी सिंह बीठू

शोधार्थी पर्यावरण विज्ञान विभाग, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

चिंकारा
(Gazella bennettii)

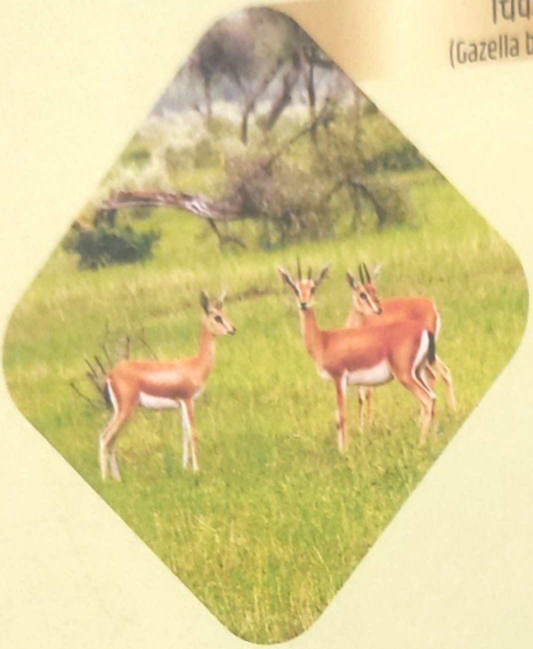

यह मनमोहक जीव राजस्थान का राजकीय पशु है। यह अत्यंत ही शांत व डरपोक स्वभाव का प्राणी है जो झुंड में रहना पसंद करता है एवं सम्पूर्ण मरुस्थलीय भाग में पाया जाता है। यह वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के अंतर्गत अनुसूची 1 में आता है। इसके शिकार पर कठोर दंड एवं कारावास का प्रावधान है।

भारतीय लोमड़ी
(vulpes bengalensis)

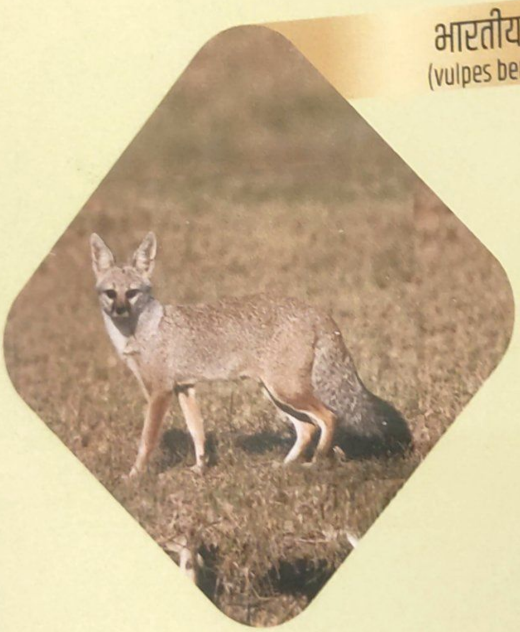

यह शर्मीले स्वभाव का प्राणी है। जो पूरे भारतीय महाद्वीप में पाया जाता है। यह निशाचर प्राणी हैं। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसकी पूँछ में काला धब्बा पाया जाता है जो इसकी पहचान में मददगार है यह किसानों का मित्र है जो चूहों आदि का शिकार करता हैं एवं विषम परिस्थितियों में शाकीय पादपों से पोषण ग्रहण करता है।

मरु लोमड़ी
(Vulpes vulpes pusilla)

यह मुख्यतः रेगिस्तानी इलाकों में पाया जाता है। यह अधिकतर जर्ड और अन्य रेतीले चूहों को अपना शिकार बनाता है। इसकी पूँछ के आखिर में मौजूद सफेद धब्बा इसकी पहचान में सहायक है। यह वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के अंतर्गत अनुसूची 1 में आता है। इसके शिकार पर कठोर दंड का प्रावधान है।

मरु बिल्ली
(Felis lybica ornata)

यह दुर्लभ और शर्मीली प्राणी है। यह मुख्यत: घरेलू बिल्ली के समान ही दिखाई देती है। यह वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के अंतर्गत अनुसूची 1 में आती है यह रेगिस्तान में पाए जाने वाले कुछ सरीसृपों एवं कृन्तक को अपना शिकार बनाती है। यह इलाके बनाकर रहना पसंद करती है। इलाके में दूसरी बिल्ली का आना पसंद नहीं करती है।

जंगली बिल्ली
(Felis chaus)

यह मुख्यत: हरे भरे इलाकों के आस पास पाई जाती है। हालांकि इसका रुप पालतू बिल्ली जैसा होता है, लेकिन यह उस से भिन्न है और इसका स्वभाव भी उस से अधिक आक्रामक होता है। यह मुख्यत: घने जंगलों एवं हरे भरे इलाकों के आस पास पाई जाती है। सम्पूर्ण राजस्थान में इसका वितरण है एवं यह संकटग्रस्त है। इसका रुप पालतू बिल्ली जैसा होता है परन्तु यह उस से भिन्न है और इसका स्वभाव भी उस से अधिक आक्रामक होता है।

गीदड़
(Canis aureus)

गीदड़ पालतू कुत्तों और भेड़ियों जैसा व्यवहार करते है परन्तु यह शर्मीले किस्म के जीव है जो मानव बसाहट से दूर रहना पसंद करते है। यह मुख्यत: शाकाहारी जीवों को खाकर अपना जीवन यापन करते है। इसका शारीरिक स्वरुप कुत्तों और भेड़ियों के समान है। गीदड़ को भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत संरक्षित किया गया है। गीदड़ खेतों में मौजूद चूहे, खरगोश और दूसरे छोटे जानवरों को खाकर कृषि कार्य में मदद करते है।

भेड़िया
(Canis lupus pallipes)

यह वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के अंतर्गत अनुसूची 1 में आता है। यह निशाचर प्राणी है। यह आकार में गीदड़ से बड़ा होता है यह छोटे शाकाहारी प्राणियों को अपना शिकार बनाते है। पूर्व में इसका वितरण क्षेत्र सम्पूर्ण राजस्थान में था परंतु हाल ही में यह प्रजाति विलुप्ति की कगार पर है जोकि मरु प्रदेश में कहीं-कहीं देखने को मिलती है।

नीलगाय
(Boselaphus tragocamelus)

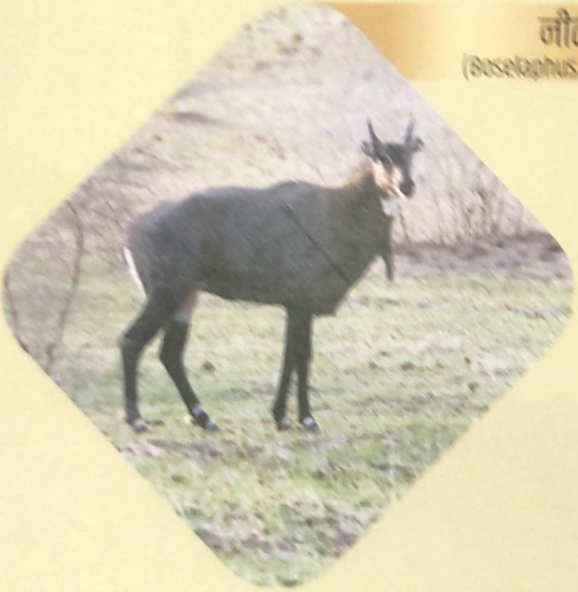

नीलगाय एक बड़ा और शक्तिशाली जानवर है। यह घास भी चरती है और झाड़ियों के पत्ते भी खाती है। मौका मिलने पर यह फसलों पर भी धावा बोलती है। कभी-कभी आक्रमक भी होती है जो कि मनुष्यों पर हमला कर देती है। गाय के समान दिखाई देने के कारण इसे गाय की संज्ञा दी गई है। वास्तव में यह एंटीलोप प्रजाति का पशु है।

जंगली सुअर
(Sus scrofa)

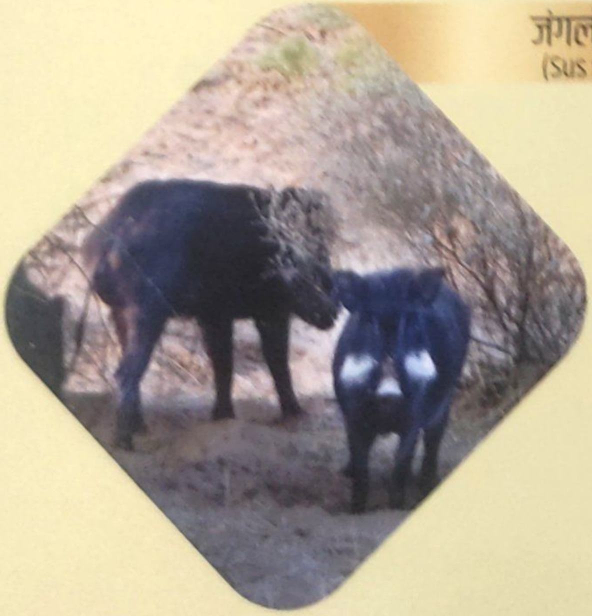

यह विश्वभर में पाई जाने वाली स्तनधारीयों की प्रजातियों में से सबसे व्यापक है। यह आम सुअर से ज्यादा आक्रमक होते हैं खेतों में फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं नर सूअर के बाहर दन्तक निकले रहते हैं जो कि लड़ाई के समय में इसकी सहायता करते हैं मरुस्थलीय क्षेत्रों में इसका वितरण गंग नहर के आने के पश्चात अधिक हुआ है।

राज गिद्ध
(Sarcogyps calvus)

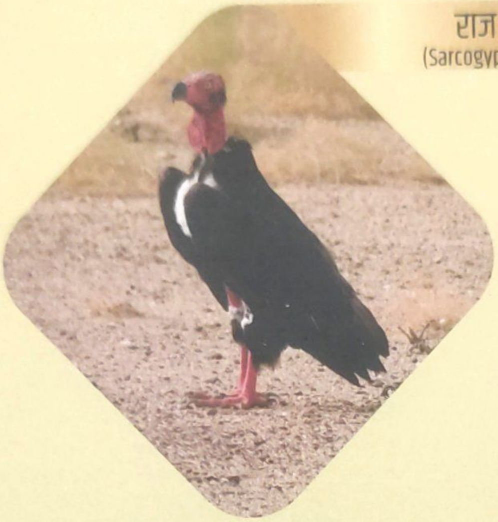

राजा गिद्ध, भारतीय काला गिद्ध भी कहते हैं। यह पुरानी दुनिया का गिद्ध है। यह मध्यम आकार का गिद्ध है, वयस्क का सिर गहरे लाल से नारंगी रंग का होता है, इसका शरीर काले रंग का होता है और पंखों का आधार स्लेटी रंग का होता है। नर के आँख की पुतली हल्के सफ़ेद रंग की होती है जबकि मादा की पुतली गाढ़े भूरे रंग की होती है।

लम्बी गर्दन वाला गिद्ध
(Gyps indicus)

यह पुरानी दुनिया का गिद्ध है जो नई दुनिया के गिद्धों से अपनी सूंघने की शक्ति में भिन्न हैं। यह मध्य भारत से लेकर दक्षिणी भारत तक पाया जाता है। यह प्रायः खड़ी चट्टानों के श्रृंग में अपना घोंसला बनाता है, परन्तु राजस्थान में यह अपना घोंसला पेड़ों पर बनाते हुये भी पाये गये हैं। अन्य गिद्धों की भांति यह भी अपमार्जक या मुर्दाख़ोर होता है।

सफेद पीठ वाला गिद्ध
(Gyps bengalensis)

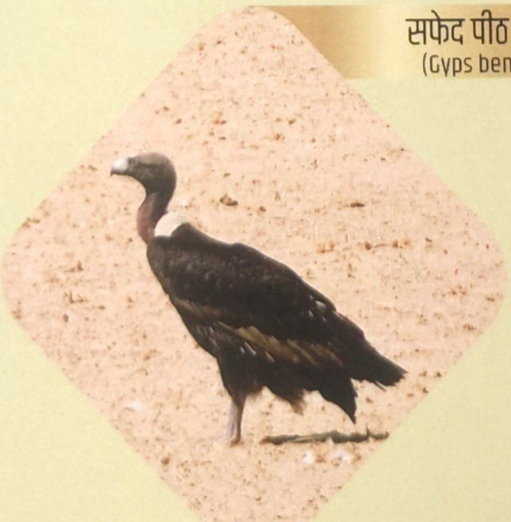

यह एक पुरानी दुनिया का गिद्ध है, जो कि यूरेशियन ग्रिफ़न गिद्ध का संबन्धी है। यह अफ़्रीका के सफ़ेद पीठ वाले गिद्ध का ज़्यादा करीबी समझा जाता था और इसे पूर्वी सफ़ेद पीठ वाला गिद्ध भी कहा जाता है। यह एक मध्यम आकार का गिद्ध है जिसके सिर और गर्दन पर बाल नहीं होते हैं। इसके पंख बहुत चौड़े होते हैं और पूँछ छोटी होती है।

इजिप्शियन गिद्ध
(Neophron percnopterus)

प. अफ्रीका से लेकर उत्तर भारत, पाकिस्तान और नेपाल में काफी तादाद में पाया जाता था किन्तु अब इसकी आबादी में बहुत गिरावट आयी है और इसे अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ ने संकटग्रस्त घोषित कर दिया है। यह प्रवासी पक्षी है। दुनिया के अन्य इलाकों में यह चट्टानी पहाड़ियों के छिद्रों में अपना घोंसला बनाता है भारत में इसको ऊँचे पेड़ों पर, ऊँची इमारतों की खिड़कियों के छज्जों पर और बिजली के खम्बों पर घोंसला बनाते देखा गया है।

हिमालयन ग्रिफन
(Gyps himalayensis)

हिमालयन ग्रिफॉन गिद्ध हिमालय और उससे सटे तिब्बत के पठार का मूल निवासी एक पुराना विश्व गिद्ध है। यह दो सबसे बड़े पुराने विश्व गिद्धों और सच्चे रैप्टरों में से एक है। इसे IUCN रेड लिस्ट में नियर थ्रेटेंड के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। हिमालयी गिद्धों में वजन कथित तौर पर 6 किलोग्राम से लेकर 12.5 किलोग्राम तक हो सकता है। सर्दियों के दौरान उच्च बर्फबारी, भोजन की कमी होती है, इसलिए वे भोजन के लिए राजस्थान, गुजरात की ओर पलायन करते हैं।

यूरेशियन ग्रिफन
(Gyps fulvus)

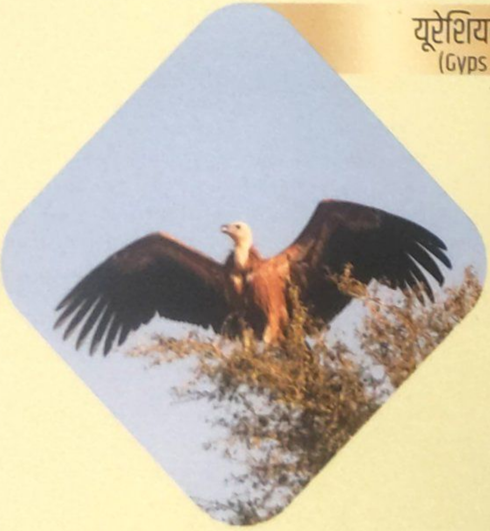

ये हिमालय के उस पार मध्य एशिया, यूरोप, तिब्बत आदि शीत प्रदेश इलाकों से आते हैं। ये भोजन की तलाश में सर्दियों के दौरान यहां आते हैं और सर्दियों के बाद वापस चले जाते हैं। ग्रिफॉन गिद्ध 93-122 सेमी लंबे, 2.3-2.8 मीटर पंखों के साथ होता है। यह अपना भोजन मरे हुए जीवो का मांस भक्षण कर करते है। इन्हें मृत्यु की निशानी माना जाता है।

सिनेरियस गिद्ध
(Aegypius monachus)

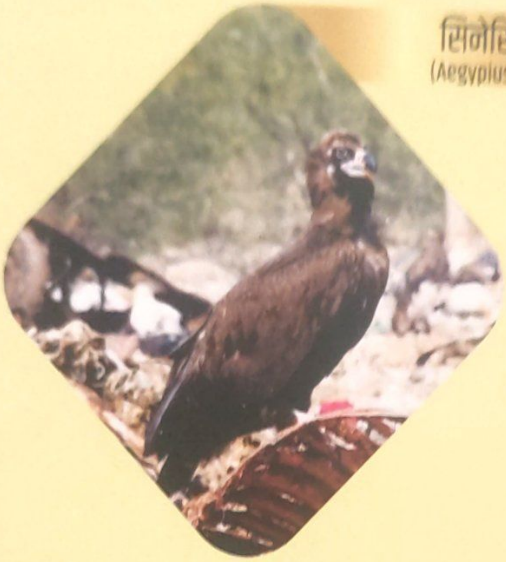

सिनेरियस गिद्ध प्रवासी है, जो सर्दी में देशांतर गमन कर भोजन के लिए पहुंचते हैं यह मुख्यत: मंगोलिया, तिब्बत, चाइना से यहां आते है। इसे खाकी गिद्ध या डाकू गिद्ध के नाम से भी जाना जाता है। बच्चों का रंग गहरा काला तथा वयस्क का रंग धूसर काला होता है। यह भी प्राय: मृत जीवों का मांस भक्षण कर अपना जीवन यापन करते है।

टॉनी ईगल
(Aquila rapax)

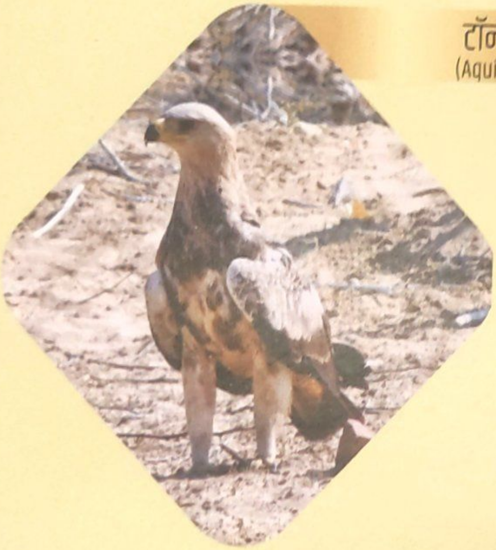

यह रेगिस्तानी इलाके में पाया जाने वाला एक झपट्टा मार पक्षी है। जो कि छोटी चिड़ियाओं, छिपकलियों तथा चूहों को खाकर अपना जीवन यापन करता है। यह गरुड़ की एक प्रजाति है। इसमें नर व मादा प्रजनन के दौरान अपने बच्चों को एक-एक कर खाना खिलाते है। इसकी चोंच व पंजे तीखे व मजबूत होते हैं जो शिकार को पकड़ने व फाड़ने में इसकी सहायता करते है।

स्टेपी ईगल
(Aquila nipalensis)

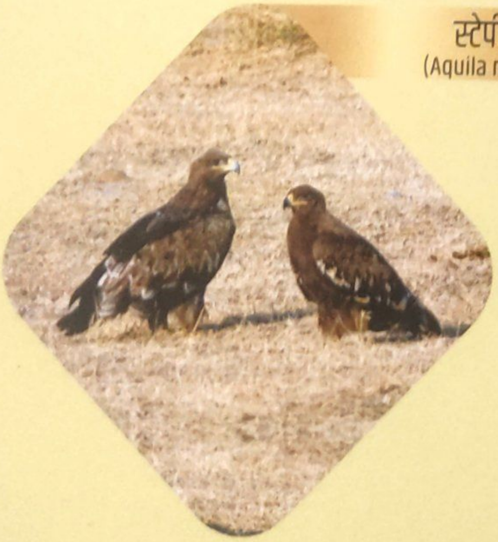

यह भी गरुड़ की एक प्रजाति है जो कि भारत में सर्दियों के दौरान प्रवास के समय आती है। इसके आने का समय अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह तक का होता है तथा सर्दियों के पश्चात अपने देशों की ओर लौट जाते है। यह प्राय एक झप्पटा मार पक्षी है परन्तु भोजन की उपलब्धता अधिक होने पर यह मरे हुए जीवों को खाना पसंद करता है। बीकानेर एवं आसपास के इलाकों में सर्दियों के दौरान यह खूब देखा जा सकता है।

इस्टर्न इंपीरियल ईगल
(Aquila heliaca)

यह भी गरूड़ की एक प्रजाति है जो कि भारत में सर्दियों के दौरान प्रवास के समय आता है। यह बहुत कम संख्या में प्रवास करता है। प्रवास के दौरान इसके व्यस्क बहुत कम तथा अव्यस्क अधिक मात्रा में देखे जा सकते है। यह मुख्यतः स्वयं शिकार कर भोजन ग्रहण करना पसंद करता है। परन्तु जहां भोजन की उपलब्धता अधिक होती है वहां मरे हुए जीवों का मांस भी खा लेता है।

बूटेड ईगल
(Hieraaetus pennatus)

यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि इसके पंख पैरों के नीचे की ओर भी बढ़ते है और पैर की उंगलियों को ढक देते है। यह भी गरूड़ प्रजाति का पक्षी है। इसकी चोंच बहुत तीखी होती है। जो कि शिकार को फाड़ने में इसकी सहायता करती है। यह छोटे पक्षियों, छिपकलियों, चूहों आदि को खाकर अपना भोजन ग्रहण करता है। इसकी उड़ान व गति इसके शिकार करने में मददगार है।

मोर
(Pavo cristatus)

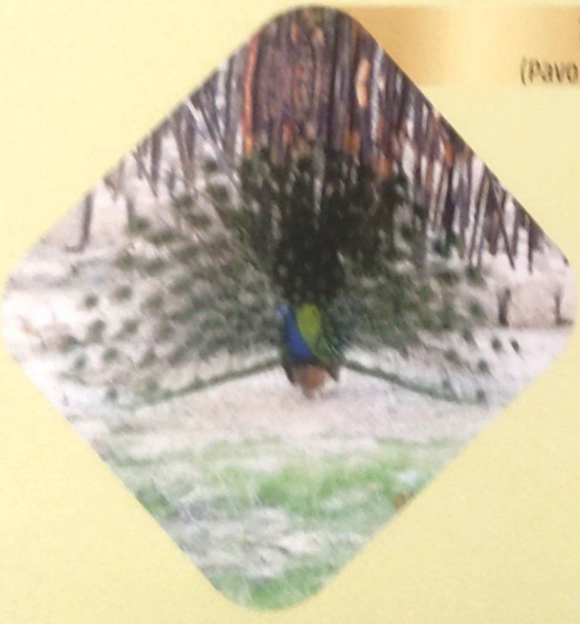

नीला मोर भारत और श्रीलंका का राष्ट्रीय पक्षी है। नर की एक खूबसूरत और रंग-बिरंगी परों से बनी पूंछ होती है, जिसे वो खोलकर प्रणय निवेदन के लिए नाचता है, विशेष रूप से बसन्त और बारिश के मौसम में। मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में बहुतायत में मिलता है, लेकिन तारबंदी व घटते वन क्षेत्रों से इनके आवास कम हो रहे है।

क्रस्टेड लार्क
(Galerida cristata)

यह एक सुन्दर पक्षी है, जो सक्षम है अन्य पक्षियों की आवाजों की प्रतिलिपि बनाएँ। हमारे क्षेत्र में यह काफी अच्छी तरह से जाना जाता है। सिर पर एक छोटा सा क्रस्ट है, इसलिए पक्षी अधिकांश क्रस्टेड लार्क घास के मैदान व झाड़ियों में घोंसला बनाना पसंद करते हैं। यह कीटों, तितलियों तथा मरुस्थलीय घास के दानों को खाकर अपना जीवन यापन करती है।

रूफ़स लार्क
(Ammomanes phoenicura)

यह दिखने में बाकी लार्क्स से भिन्न है। इसका रंग लाल-सा भूरा होता है। यह सर्दियों के दौरान अधिक सक्रिय रूप से देखने को मिलती है। यह अन्य लार्क से आकार में कुछ बड़ी होती है। यह मुख्यतः कीटों, छोटे जीवों को खाकर अपना जीवन यापन करती है। इसका रंग हल्का भूरा होने के कारण बड़े जीवों से इसकी रक्षा होती है।

चरचरी धान चिड़ी
(Anthus rufulus)

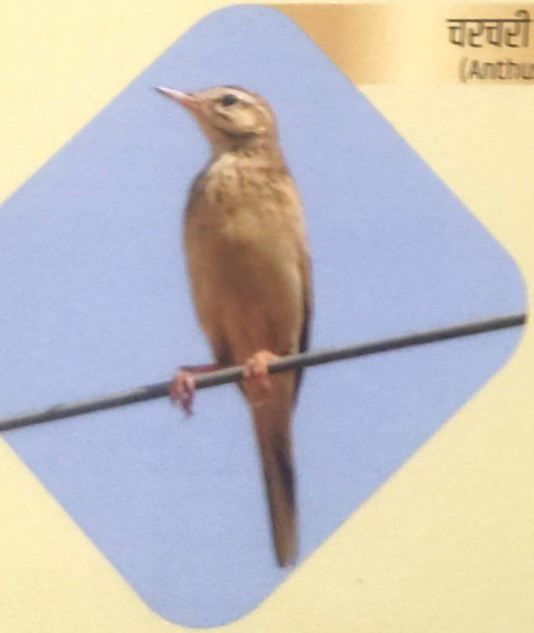

एक चंचल पक्षी है जो समभूमि, धान के खेतों, वाटिकाओं आदि स्थानों पर कीड़े-मकोड़े पकड़ते हुए देखा जा सकता है। यह मुख्यतः खेतों के आसपास अधिक दिखाई देती है। जिसके कारण इसे पैडीफिल्ड पीपीट कहते है। जिसका अर्थ है धान के खेतों के आसपास। यह मुख्यतः झुंड में रहती है इसका रंग हल्का धूसर होता है जो कि इसे रेगिस्तानी वातावरण में घुला देता है। जिससे इसके भक्षक इसका शिकार करने में दिक्कत महसूस करते है।

पीली आंख का कबूतर
(Columba eversmanni)

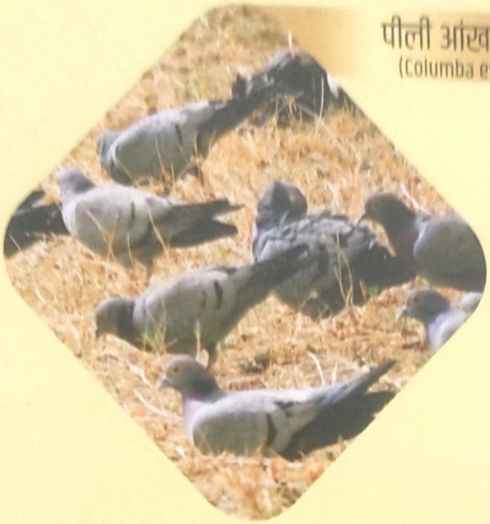

यह प्रवासी पक्षी है। जो ठंड पड़ने पर गर्म इलाकों की तरफ आते हैं। दिखने में आम कबूतर जैसे होते हैं इन्हें पीली आंखों से पहचाना जा सकता है। यह ईरान से भारत की ओर सर्दियों के दौरान प्रवास करते हैं। सर्दियों में यह भारत में रेगिस्तानी इलाकों में अपना बसेरा जमाते हैं। यह रेगिस्तानी वनस्पति के बीजों को खाना पसंद करते हैं।

वेरिएबल व्हीटीयर
(Oenanthe picata)

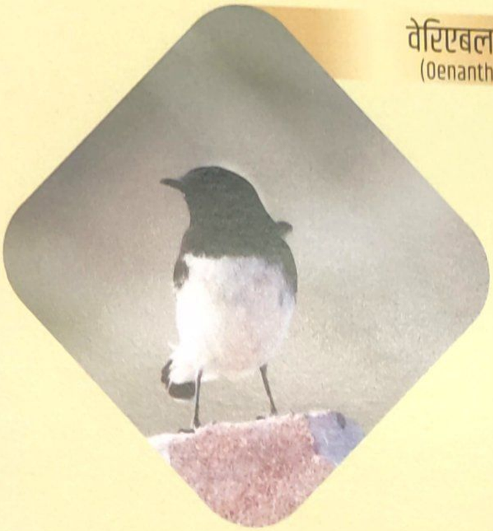

यह छोटा पक्षी गर्म मरुस्थल में ही पाया जाता है। यह एक प्रवासी पक्षी है। इसका रंग काला और सफेद होता है। इसकी तीन उप प्रजातियां है जो कि रेगिस्तान में देखी जा सकती है। यह मुख्यत: छोटे कीटों, तितलियों आदि को खाकर अपना जीवन यापन करती है। यह मुख्यत: एकल ही रहना पसंद करती है। इसमें नर व मादा के रंग अलग-अलग होते है।

डेजर्ट व्हीटीयर
(Oenanthe deserti)

यह मरुस्थल में पाया जाने वाला छोटा पक्षी है। जो कि सर्दियों के दौरान अधिक देखने को मिलता है। इसका रंग मरुस्थल के समान होने के कारण डेजर्ट व्हीटियर नाम दिया गया है। यह मरुस्थल में पाए जाने वाले कीड़ों को खाता है। इसका रंग गेरुआं होता है। नर एवं मादा दिखने में दोनों अलग अलग होते है। नर की पहचान इसके आंख के पास पाए जाने वाले काले धब्बे से होती है।

इसाबेलिन व्हीटीयर
(Oenanthe isabellina)

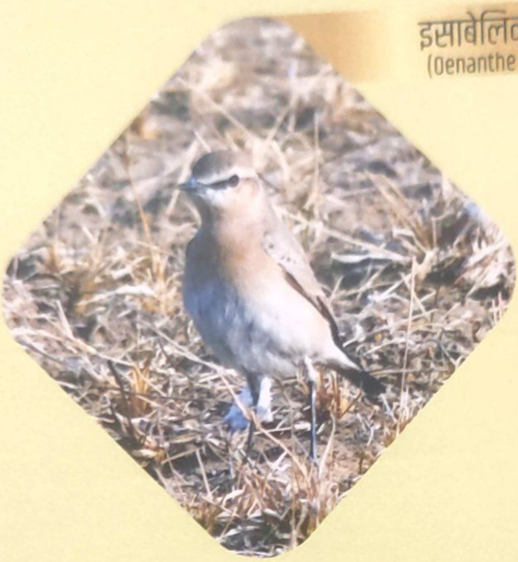

इसाबेलिन व्हीटीयर यह नाम इसे इसकी विशिष्ट पहचान के कारण दिया गया है। इसकी पहचान इसकी आंख के पास पाई जाने वाली काली रेखा से होती है। दिखने में यह डेजर्ट व्हीटियर के समान ही होती है। यह मुख्यतः जमीन पर बैठना पसंद करती है। यह छोटे कीट पतंगों को खाकर अपना जीवन यापन करती है। यह भी सर्दियों के दौरान यहां देखने को मिलती है।

काला ड्रोंगो
(Dicrurus macrocercus)

यह पक्षी अपनी लम्बी और अद्भुत पुंछ से पहचाना जाता है। यह गुस्सैल और निडर प्रकृति का होता है। ऐसा माना जाता है कि यह कौवे की प्रजाति के अधिक निकट है। यह छोटे कीट पतंगों को खाना अधिक पसंद करता है। कभी-कभी इसे छिपकली के छोटे बच्चों का शिकार करते भी देखा गया है। यह मुख्यतः एकल रहना पसंद करता है। अपने इलाके में दूसरे सहजातिय पक्षी का आना पसंद नहीं करता है।

बगुला
(Bubulcus ibis)

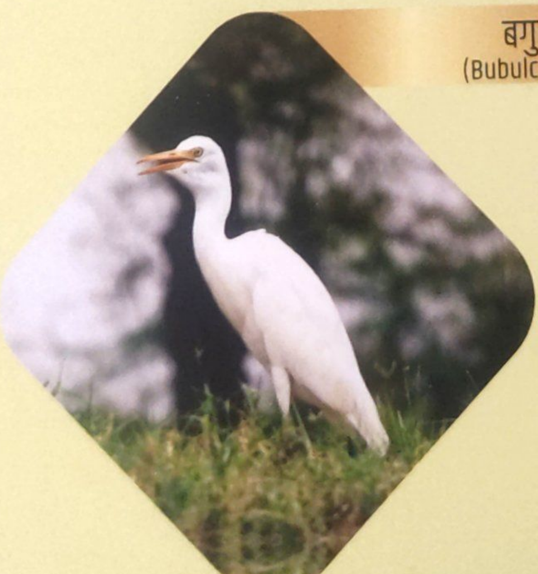

यह सफेद रंग का पक्षी है। इनकी चोंच पीली-केसरिया रंग की होती है। बारिश के दिनों में यह गायों व भेड़ बकरियों के इर्द-गिर्द चलता हुआ देखा जा सकता है। इन पशुओं के खुरों से हटने वाली मिट्टी के कारण कीटों का लार्वा जो बाहर आता है उसे यह खाते है। इसे पशुमित्र भी कहा जाता है। क्योंकि यह उनके परजीवियों का भक्षण करता है।

नीलकंठ
(Coracias benghalensis)

यह अक्सर सड़क के किनारे पेड़ों और तारों में बैठे हुए देखे जाते है और आमतौर पर खुले घास के मैदान और झाड़ियों के जंगलों में देखे जाते है। इसे सतरंगी भी कहा जाता है। इसे नीलकंठ भी कहा जाता है। यह छोटे कीट पतंगों तथा कई बार मेंढ़क व छिपकली के बच्चों का शिकार कर भी अपना पेट भर लेता है। इसमें नर व मादा अलग अलग रंग के होते है।

हूपु
(Upupa epops)

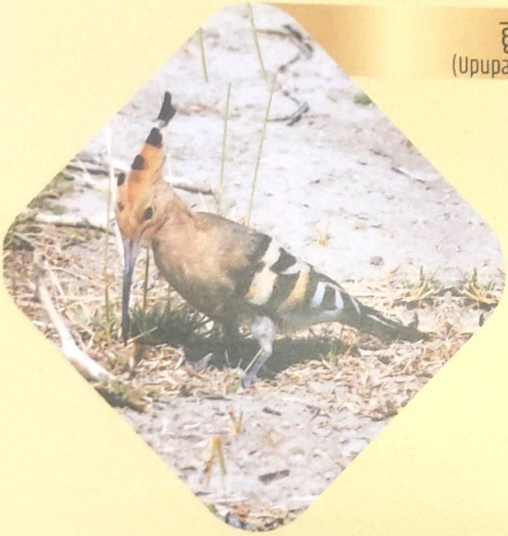

हूपु इसका यह नाम इसकी आवाज से पड़ा है। इसकी आवाज हु-हु प्रकार की होती है। इसे हुदहुद भी कहा जाता है। इसकी खासियत इसके सर पर मौजूद पँखो की कलगी होती है। इसे स्थानीय भाषा में कठफोड़ा भी कहा जाता है। यह कीटों के लार्वा व कीटों का भक्षण कर अपना जीवन यापन करता है। इसके अन्दर नर व मादा आकार में अलग-अलग होते है।

पळस मैना
(Pastor roseus)

यह मैना पक्षी की एक प्रजाति है जो कि सर्दियों के दौरान यहां प्रवास के दौरान आती है। रेगिस्तानी इलाकों में पाई जाने वाली झाड़ बेरी के फलों को खाना यह अत्यधिक पसंद करती है। यह मुख्यत: झुंड में रहती है तथा हवा में अपनी कलाबाजी व आकृतियां निर्मित करने के लिए जानी जाती है।

मैना
(Acridotheres tristis)

यह मूल रूप से एक दक्षिण एशियाई पक्षी है। यह उन पक्षियों में से एक है जिनकी जनसंख्या और प्राकृतिक निवास स्थल तेजी से बढ़ रहे हैं। यह धान मंडियों के आसपास अधिकतर देखी जाती है तथा खेतों में रहना इसे पसंद है। जिससे इसे भोजन की उपलब्धता निरंतर होती रहती है। यह छोटे अनाज तथा कीटों को खाकर अपना जीवन यापन करती है।

कमेड़ी
(Streptopelia decaocto)

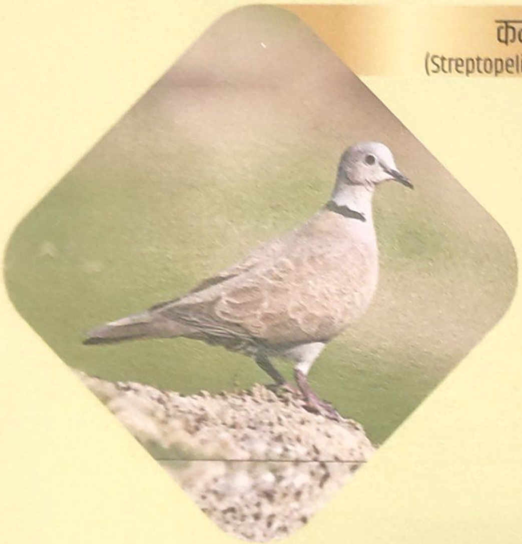

यह गेहूंए रंग की होती है। इसकी गर्दन पर उपस्थित काली पट्टी इसकी विशिष्ट पहचान है। यह स्थानीय भाषा में कमेड़ी के नाम से जानी जाती है। कुछ इलाकों में इसे गेरी भी कहते है। यह मुख्यतः ज्वार, बाजरा, गेंहूँ आदि अनाज खाना पसंद करती है। इसका मुख्य आवास खेतों तथा मनुष्य बस्ती के आसपास होता है।

गौरैया
(Passer domesticus)

स्थानीय भाषा में इसे चिड़कली भी बोलते है। यह घरों के आसपास तथा खेतों में रहना पसंद करती है। यह शाकाहारी व मासांहारी दोनों प्रवृत्ति की है। छोटे अनाज जैसे गेंहू, बाजरी खाना पसंद करती है तथा छोटे कीड़े जैसे तितली, मौथ आदि को खाना पसंद करती है। इसमें नर व मादा दोनों अलग अलग रंग के होते है।

इंडियन कोबरा
(Naja naja)

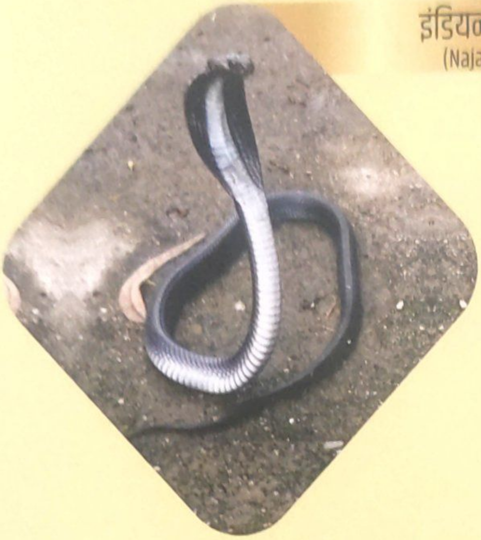

यह अक्सर मानव बस्तियों के आसपास, खेतों में एवं शहरी इलाकों के बाहरी भागों में अधिक संख्या में पाया जाता है। इसका जहर प्राणघातक होता है। यह काले रंग का सर्प होता है जो कि चुहे, छोटे पक्षी व उनके अण्डे खाकर अपना जीवन यापन करता है। सर्दियों के समय गर्म स्थान की खोज में घरों में तथा झुग्गी झोंपड़ियों में आकर बैठ

सॉ-स्केल्ड वाईपर
(Echis carinatus)

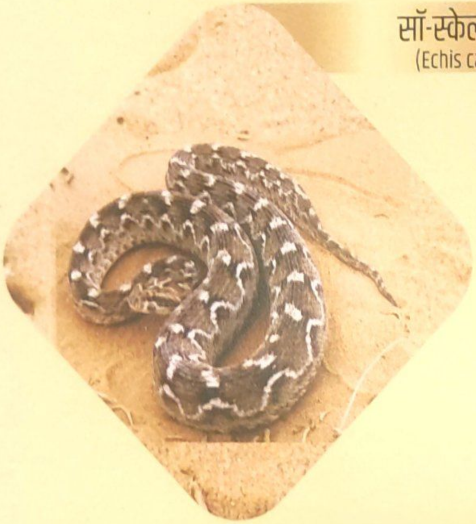

यह सर्प ज्यादातर आबादी वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। इसे स्थानीय भाषा में बांडी के नाम से जाना जाता है यह चूहा तथा पक्षियों को खाकर अपना जीवन यापन करता है। यह अत्यन्त जहरीला सांप है जो कि छोपा आरीनुमा संरचना बनाकर बैठता है। यह गुस्सैल होता है तथा बहुत जल्दी काटता है।

करेत
(Bungarus caeruleus)

इस श्रेणी के सर्प ज्यादातर रात में ही निकलते हैं यह बेहद जहरीला सांप है यह स्थानीय भाषा में पीवणा के नाम से जाना जाता है। यह अत्यंत खतरनाक सांप है जिसके विष दंत अत्यंत पतले होते हैं जो कि काटने पर दिखाई नहीं देते हैं। इस सांप की मुख्य विशेषता यह है कि इसकी बाह्य संरचना पर सफेद धारियां पाई जाती है जो कि इसे काले नाग से अलग करती है।

इंडियन काला कोबरा
(Naja naja)

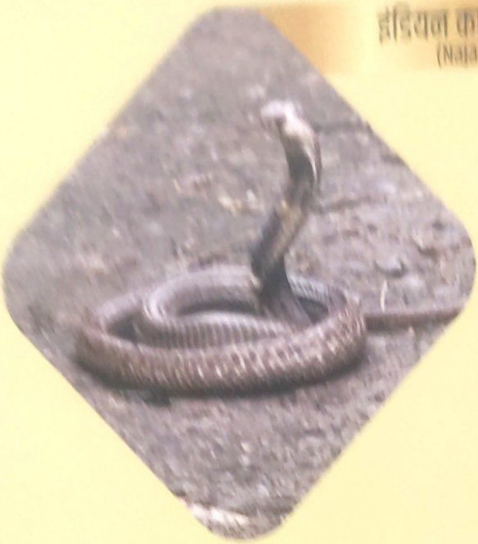

यह इंडियन कोबरा की ही एक प्रजाति है जोकि अत्यंत जहरीली है यह अत्यंत आक्रामक सांप होता है जो चूहों तथा छोटे पक्षियों को खा कर अपना जीवन यापन करता है। यह गुस्सैल प्रवृति का सर्प होता है। जो कि इंसानों के सामने आने पर उन्हें तुरंत काटने के लिए करता है। इसके सिर के पीछे उपस्थित वी का आकार इसकी मुख्य पहचान है।

रजतबन्सी
(Spalerosophis arenarius)

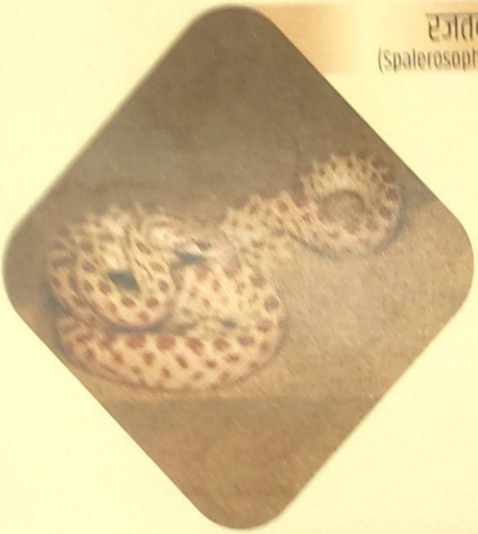

इस सर्प के सिर का भाग काला होता है यह सुंदर तथा विषहीन होता है जोकि रेगिस्तान में पाया जाता है इसकी विशेषता यह है कि इसके शरीर पर स्वर्णिम धब्बे पाए जाते हैं। जिस कारण इसे रजत बंसी कहा जाता है यह भी चूहों को खा कर अपना जीवन यापन करता है तथा कभी कभी छोटे पक्षियों तथा उनके अंडों पर भोजन करता हुआ देखा गया है।

रॉयल स्नेक
(Spalerosophis atriceps)

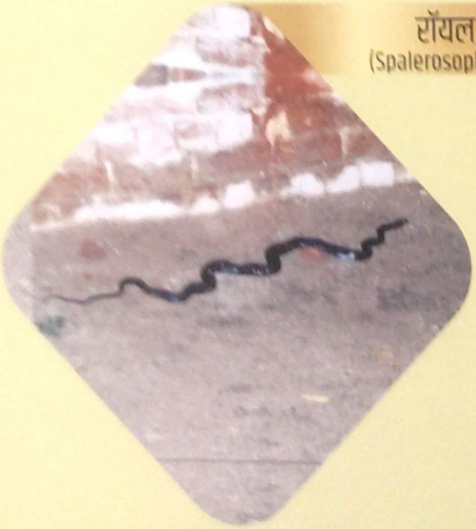

यह सर्प थार मरुस्थल में पाया जाता है। इसका विष जहरीला नहीं होता है यह भी रजत बंसी की एक प्रजाति है परंतु दिखने में यह काले रंग का होता है जो इसे भारतीय काला नाग के जैसा प्रतीत करवाता है जिस कारण अजानता वश कुछ लोग इसे मार देते हैं परंतु यह कोबरा की तरह अपने फन को नहीं उठाता है तथा विषहीन होता है।

घोड़ा पछाड़
(Platyceps ventromaculatus)

इस सर्प का रंग मिट्टी जैसा होता है इसे स्थानीय भाषा में घोड़ा पछाड़ के नाम से भी जानते हैं यह दौड़ने में इतना तेज होता है इसी कारण इसकी तुलना एक रेसर से की गई है जो कि इसकी विशेषता है। यह छोटे कीड़ों चूहों वह पक्षियों का भोजन करता है। इसका रंग छलावरण में इसकी मदद करता है। जिससे यह इसके शिकारियों का शिकार होने से बच जाता है।

एफ्रो एशिअन सैंड स्नेक
(Psammophis schokari)

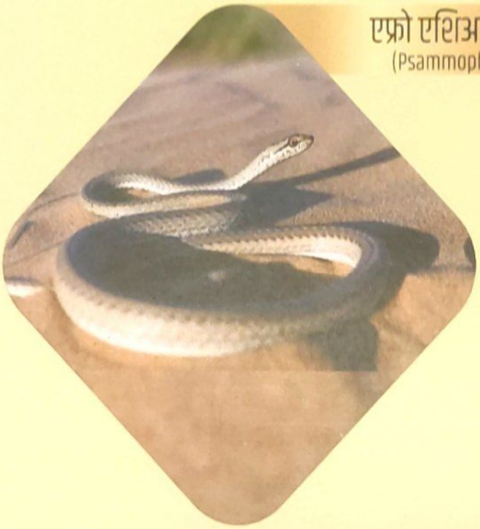

इसका शरीर लम्बा और पतला होता है। इसका रंग बालू के समान होने के कारण इसका नाम सैंड स्नेक रखा गया है। मुख्यत: यह विषहीन होता है। यह रेगिस्तान में पाये जाने वाले छोटे जीवों, कीटों तथा पक्षियों व उनके अंडों को खाकर अपना भोजन ग्रहण करते है। यह बालू में आसानी से छुप जाता है जो कि छलावरण में इसकी सहायता करता है तथा परभक्षियों से बचने में मददगार साबित होता है।

सिंध आउलहैडेड स्नेक
(Lytorhynchus paradoxus)

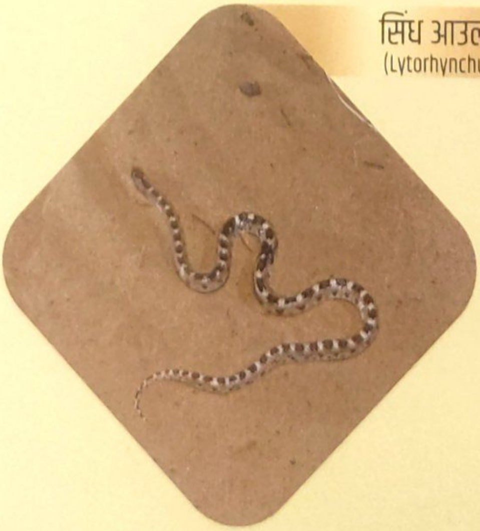

यह सांप जहरीला नहीं होता। इसका सिर इसकी गर्दन से चौड़ा होता है इसके शरीर पर छोटे-छोटे काले धब्बे इसकी पहचान है। यह रेगिस्तानी इलाके में पाये जाने वाले छोटे कीटों को खाकर अपना जीवन यापन करता है। अज्ञानता वश लोग इसे बांडी समझकर मार देते है। जिससे इसकी संख्या निरंतर कम होती जा रही है।

कॉमन कैट स्नेक
(Boiga trigonata)

यह सिक्किम को छोड़कर पूरे भारत में पाया जाता है इसके सिर पर अंग्रेजी के अक्षर Y की आकृति बनती है जो इसको पहचानने में मददगार होती है। यह रेगिस्तानी प्रदेश में पाया जाता है यह मुख्यत: झाड़ियों व पेड़ों पर रहना पसंद करता है छोटे जीवों चूहों तथा पक्षियों का शिकार कर अपना भोजन ग्रहण करता है।

बंगाल गोह
(Varanus bengalensis)

गोह मेंढक, कीड़े-मकोड़े, मछलियाँ और केकड़े खाती है। गोह जब दौड़ती है तब पूछ ऊपर उठा लेती है। गोह वन्य-प्राणी अधिनियम के तहत संकट अवल सूची में शामिल है। गो फसलों को नुकसान पंहुचाने वाले कीटों को खाते है। खेती में यांत्रिकी के कारण इनके आवास नष्ट हो रहे हैं। यह विषैली नहीं होती है तथा किसान की मित्र होती है।

मरु गोह
(Varanus griseus)

यह मुख्यत: मरुस्थलीय भूमि में पाया जाता है। यह बंगाल गोह की तरह ही दिखाई देता है। इसका रंग इसे बंगाल मोनिटर से अलग करता है। इसकी पूंछ पर पाये जाने वाले काले गोल घेरे इसकी पहचान में सहायक होते है। यह मरुस्थलीय तथा घास के रंग का होने के कारण यह छलावरण दर्शाता है। यह जहरीला नही होता है पर कई बार लोग इसे जहरीला समझ कर मार देते है जिससे इनकी प्रजाति खतरे में है।

सांडा
(Saara hardhardwicki)

यह शांत स्वभाव का जीव होता है। लोग भ्रम में इसके तेल के चक्कर में इसका शिकार करते हैं, डॉक्टरों के मुताबिक इस छिपकली से मिलने वाला तेल किसी दूसरे जानवर से अलग नहीं होता है। यह मुख्यतः एकमात्र शाकाहारी छिपकली है जो घास को खाकर अपना जीवन यापन करती है, इसका रंग मिट्टी जैसा होने के कारण इसे परभक्षियों से बचाता है।

अगामा
(Trapelus agilis)

यह मुख्यतः थार मरुस्थल के धोरों में पाई जाती है और यहां पाए जाने वाले छोटे कीड़ों को यह अपना भोजन बनाती है। इसमें नर का रंग हल्का नीला व धूसर होता है। जबकि मादा बिना कोई रंग लिए होती है। यह तीव्र गति से दौड़ के लिए प्रसिद्ध है। इसकी गति इसके शिकार से बचने में इसकी मददगार है। इसका रंग इसे परभक्षियों से बचाता है।

गिरगिट
(Calotes versicolor)

यह दिखने में गिरगिट की तरह नजर आती है। आमतौर पर यह मनुष्य आबादी तथा बाग बगीचों के आस पास नजर आती है। इस कारण इसे गार्डन लिजर्ड के नाम से जाना जाता है। यह मुख्यतः छोटे कीट पतंगों, चीटियों आदि को खाकर अपना पेट भरती है। नर दिखने में मादा से ज्यादा ताकतवर व बड़ा दिखाई देता है। इनमें अपने इलाके को लेकर झगड़ा होता रहता है।

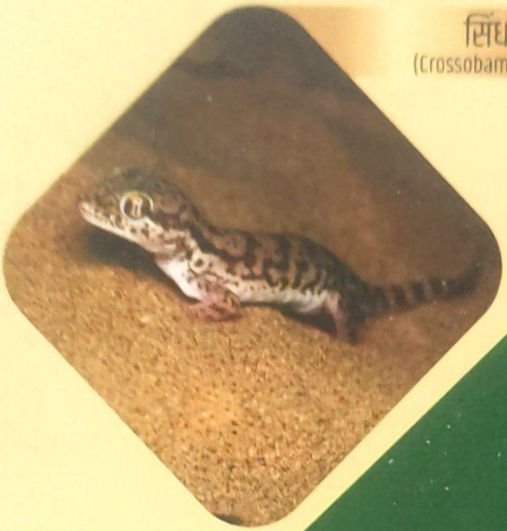

सिंध गेको
(Crossobamon orientalis)

रेगिस्तानी इलाकों में पाई जाने वाली छिपकली है जोकि छोटे कीटों को खाकर अपना भोजन ग्रहण करती है। इसका रंग घरेलू छिपकली से भिन्न होता है। इसके शरीर पर पाये जाने वाले धब्बे इसकी विशेष पहचान है तथा रेगिस्तानी इलाकों में परभक्षियों से बचने में इसकी सहायक है।

वन्यजीवों के विलुप्ती के प्रमुख कारण

आवास का हास

मनुष्य के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वनों का विनाश करने से वन्यजीवों के आवास स्थल निरंतर संकुचित होते गए हैं बढ़ते गए मानव ने उधोगों बांध निर्माण सड़कों एवं रेल मार्गो आवासीय परिसरों इत्यादि बनाने के लिए जंगलों का सफाया करके प्राकृतिक आवासों को सर्वाधिक नुकसान पहुंचाया है इसके अलावा जनसंख्या वृद्धि के साथ बढ़ता शहरीकरण और खत्म हो रहे प्राकृतिक आवास एवं खेती के तौर तरीकों में आए बदलाव जैसे खेतों की मेंड़ हटाकर तारबंदी करना भी वन्यजीवों के घटती संख्या के लिए जिम्मेदार है

अवैध शिकार

वन्यजीवों के संकटग्रस्त एवं विलुप्त होने का एक अन्य मुख्य कारण वन्यजीवों का अवैध शिकार है मानव सदियों से अपने भोजन पदार्थ के रूप में जानवरों का शिकार करता रहा है भोजन के अतिरिक्त मानव जानवरों से सौंदर्य प्रसाधन प्राप्त करने चमड़े की वस्तुएं बनाने फर ऊन आदि के लिए वन्य जीवों का शिकार करता है जिस वजह से प्राकृतिक तंत्र बेहद नुकसान पहुंचा है

प्रदूषण

पर्यावरण की स्थिति में अनावश्यक बदलाव जिसको परिणामस्वरुप प्रदूषित कह सकते है। और ऐसा ही वायु, जल, मृदा प्रदूषण के साथ भी है। लेकिन हवा, पानी, मिट्टी की गुणवत्ता में परिवर्तन की वजह से पशु और पौधों की प्रजातियों की संख्या में कमी होना काफी हद तक जिम्मेदार है।

अन्य कारण

बढ़ती सड़क दुर्घटनाएं
नंगे तारों के कारण करंट लगने से मृत्यु
आवारा कुत्तों का बढ़ता प्रकोप

धरती करती मानव से यह पुकार,
हमें बचाकर करो इसका श्रृंगार।